

सिन्धी भाषामय श्री आदि जिन स्तवनम्

खरतरगच्छ कवि समयसुन्दर (अकबर कालीन)

मस्देवी माता दै आखइ, इह्दर उह्दर कितनुं झाखइ
आउ आसाणइ कोल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 11।
मिट्ठा वे मेवा तै कुं देवा, आउ इकट्ठे जेमण जेमां।
लावां खूब चमेल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 12।
कसबी चीरा पै बांधू तेरे, पहिरण चोला मोहन मेरे।
कमर पिछेवइ लाल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 13।
काने केवटिया पैरे कइया, हाथे बंगा जवहर जइया।
मल मौतियन की माल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 14।
बांगा लाटू चकरी चंगी, अजब उस्तादां बहिकर रंगी।
आंगण असाइइ खेल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 15।
नयण वे तैडे कज्जल पावां, मन भावदंडातिलक लगावां।
रुइइ कैदे कोल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 16।
आवो मेरे बेटा दूध पिलावां, वही बेइइ गोदी में सुख पावां।
अन्न असाइइ बोल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 17।
तूं जग जीवन पाण आधार, तूं मेरा पुता बहुत पियारा।
तैथुं तंजा घोल ऋम जी, आउ असाइइ कोल 18।
ऋमदेव कुं माया बुलावै, खुसिया करेदा आपे आपे आवै।
आणंद अम्मा अंग ऋम जी, आउ असाइइ कोल 19।
सत्त्वा बे साहिब तूं धम धोरी, शिवपुर सुख दे मै कुं भोरी।
समयसुन्दर मन रंग ऋम जी, आउ असाइइ कोल 110।